अद्भुत दीप

शब्द - अर्चना जोत जलाकर पत्तल की थाली में लाया ।
जिह्वा औ' अधरों के ऊपर मीठा बोल अभागा लाया ।
इत्र गिराते दोनों नयनां साँसों में है धूप सुगन्धी
अष्टगंध से भरी अंजुरी मधुमास जीवन का लाया ॥

मेरे आँगन धूप बरसती कभी झरी न हँसी ठिठोली ।
नित आशा के तारे टूटे नहीं भरी पूर्णों ने झोली ।
कभी-कभी हाँ! चंद्र चतुर्थी घिरा-घिरा मेघों में दिखता
स्याह मुकद्दर मस्तक बैठा रहन करी रोगों के खोली ॥

जो आइने में नहीं दिखे तस्वीर माँगने आया हूँ ।
मैं रक्त बराबर पानी की तासीर माँगने आया हूँ ।
मुझको इस अन्तिम पड़ाव पर तीखी-पैनी धार नहीं दो
शापित यौवन में मरने की आसीस माँगने आया हूँ ॥

जग-जीवन का ताना-पेटा अपने से निपटा रखा है ।
ले लेकर कुछ साँस उधारे धड़कन ने उलझा रखा है ।
इकतारे की तार न टूटी मैं परदेसी बना हुआ हूँ
बिना तेल-बाती जुगाड़ कर अद्भुत दीप जला रखा है ॥